ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-12* March- 2017
Anthology : The Research

प्रेम का स्वरूप

सारांश

प्रेम ही जीवन है। सच्च प्रेम होने पर ही भक्त को ईश्वर की प्राप्ति होती हैं। प्रेम के मार्ग में बाधाएँ आती है किन्तु भक्त इन बाधाओं से विचलित नहीं होता हैं सूफी कवियों ने आध्यात्मिक प्रेम का आधार हिन्दु राजाओं की कथाओं से ग्रहण किया है।

मुख्य शब्द : आध्यात्मिक, कृतज्ञता आसक्ति सत्कर्मियों गिड़गिड़ाता मुहासिबी तदनुरूपता आत्मावलोकन सांसारिक सुहरवर्दी अमरदपस्ती

रेखा
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
सिंघानियां यूनिवर्सिटी,
पचेरी बडी, झुन्झुन,
राजस्थान

प्रस्तावना

मानव–जीवन की आत्मा मूलतः प्रेम है। अगर इसे वहाँ से हटा दिया जाए तो जीवन नीरस और निर्मम बन जायेगा, जीवन का आनन्द जाता रहे। यों तो प्रेम अनेक प्रकार का होता है, लेकिन इन सब में ईश्वर के प्रति पाया जाने वाला प्रेम ही सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ और पवित्रतम होता है। इमाम गजाली के शब्दों में–

'मालूम होना चाहिए कि ईश्वरीय प्रसन्ता श्रेष्ठ उद्देश्य है। मिलन की कामना, साहचर्य की इच्छा और प्रसन्नता प्राप्त करने की भावना–ये सब उससे नीचे है।

अल्लामा हमीदुद्दीन फराही ने प्रेम का उल्लेख करते हुए लिखा है–

'जिस प्रकार हर कार्य का एक उद्देश्य होता है, जिस पर वह कार्य समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार ईमान और कुरान शिक्षा का लक्ष्य ईश–प्रेम है। तमाम नबियों की शिक्षा का केन्द्र और आत्मा यही थी और आध्यात्मिक जीवन इसी का नाम है। कुरान तो इस शिक्षा से भरा हुआ है, पर तौरात और इंजील में भी यह हुक्म साफ–साफ सुना दिया गया है। हजरत ईसा से पूछा गया कि तौरात के आदेशों में सर्वोच्च आदेश क्या है, तो कहा, ईश–प्रेम, ह्दय, आत्मा और बुद्धि से करना। वही सबसे पहला और सबसे बड़ा आदर्श है। (मत्ती 22) जिस तरह ईश–प्रेम धर्म का उद्देश्य है, उसी तरह इस प्रेम की आत्मा निष्ठा है। मुख से प्रेम का दावा करना और चीज है और प्रेम की निष्ठा और चीज। ईश–प्रेम ईमान और कृतज्ञता प्रकाशन का फल है, इसलिए कुरान ने भी कहीं प्रेम करने का आदेश नहीं दिया है, बल्कि केवल यही बताया है कि जिनके पास ईमान की पूँजी है वही वास्तव में अल्लाह को अपना प्रिय बनाते हें। कुरान में है

'कुछ लोग ऐसे हैं जो ईश्वर के सिवा दूसरों को उसका समकक्ष और प्रतिद्वन्द्वी बनाते है और उनके प्रति ऐसे आसक्त है, जैसे ईश्वर के साथ आसक्ति होनी चाहिए हालांकि ईमान रखने वाले लोगों को सबसे बढ़कर अल्लाह प्रिय होता है।

कुरान की इस आयत के अनुसार प्रेम का अधिकारी केवल ईश्वर है, शेष जितने भी प्रेम इस जगत में है, वे सब उसके अधीन होने चाहिए। सूफी इसी प्रेम के कायल है। कुरान के अनुसार ईश–प्रेम के लिए अनिवार्य है कि उसके रसूल का आज्ञापालन किया जाए।

'हे नवी।' लोगों से कह दो 'यदि तुम वास्तव में अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुकरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा ओर तुम्हारी गलतियों को क्षमा करेगा।

इस आयत की व्याख्या करते हुए सूफियों के इमाम हसन बसरी ने लिखा हैं।

'अल्लाह के रसूल के समय में कुछ गिरोहों ने विचार किया कि वे भी अल्ला (ईश्वर) से प्रेम करते है। अल्लाह ने उनके कथन की व्यावहारिक पुष्टि के लिए उनके सामने यह कसौटी रख दी। अतएव जो व्यक्ति अल्लाह के प्रेम का दावा करता है और उसके रसूली की सुन्नत का विरोध करता है, वह बड़ा झूठा हैं और अल्लाह की किताब उसके दावे को झुठलाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रेम के आध्यात्मिक स्वरूप को समझने के लिए सूफीमत का अध्ययन आवश्यक हैं। जायसी, मंझन, कुतुबन आदि सूफी कवियों ने माना है कि

प्रेम से ही ईश्वर को पाया जा सकता है। अधिकतर कवियों ने अपने काव्य का विषय हिन्दु राजाओं से संबंधित प्रेम प्रसंगो को बनाया है। इनका प्रेम लौकिक से आध्यात्मिक गहराइयों तक पहुॅचता है।

कुछ बुजुर्गो का कहना है कि अल्लाह ने कुछ सत्कर्मियों की ओर ब्रह्म (ईश–वाणी) भेजी कि मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं जो मुझ से प्रेम करते है और मैं उनसे प्रेम करता हूॅ। वे मेरी ओर आसक्त होते है और मैं उनकी ओर आसक्त होता हूॅ। वे मुझे देखते हैं और मैं उन्हें देखता हूॅ। अगर तुम उनके तरीके पर चलोगे, तो मैं तुम से प्रेम करूॅगा और अगर उनसे मुॅह मोड़ोगे तो मैं तुम से घृणा करूॅगा। उन्होंने पूछा, पालनहार! उनकी क्या पहचान है? फरमाया, वे दिन को सायों पर ऐसी निगाह रखते है, जैसे मेहरबान चरवाहा अपनी बकरियों पर, सूरज के डूबने की प्रतीक्षा में रहते है, जैसे कि चिडियॉ, जब रात छा जाती है, अॅधेरा हो जाता है, बिस्तर बिछाये जाते है और हर व्यक्ति अपने प्रिय के साथ एकांत में होता है, तो वे पैरों पर खड़े हो जाते है और अपने चेहरों को बिछा देते है, मेरी बोली में मुझ से बातें करते है और मुझ से मेरे इनाम के लिए खुशामद करते है, कोई रोता है, कोई गिड़गिड़ाता है, कोई शिकायत करता है, कोई खड़ा हो जाता है, कोई बैठा रहता है, कोई रूकूअ में रहता है, कोई सज्दे में रहता है। मेरे कारण वे जो कुछ सहन करते है, मैं देखता रहता हूॅ और मेरी मुहब्बत में जो शिकवे करते रहते है, मैं सुनता रहता हूॅ। सब से पहले मैं उन्हें तीन चीजें देता हूॅ।

1. अपना नूर उनके दिलों में डालता हूॅ, तो वे मेरे बारे में खबर देते है, जैसे मैं उनके बारे में खबर देता हूॅ।
2. अगर आसमान व जमीन और जो कुछ उनके भीतर है, उनकी तराजू में डाल दिया जाए, तो मैं उसे उनके लिए कम ही समझता हूॅ।
3. मैं स्वयं उनकी ओर आकृष्ट होता हूॅ। क्या तुम्हें मालूम है कि मैं जिसकी ओर आकृष्ट होता हूॅ, उसे क्या देना चाहता हूॅ?

हजरत अबू अब्दुल्लाह अल–कुरशी ने कहा कि प्रेम की वास्तविकता यह है कि तुम जिससे प्रेम करो, उस को अपना सब कुछ दे दो, अपनी किसी चीज को बचा कर न रखो।

हजरत अबू अली रूजबारी ने कहा कि प्रियतम के आदेश व निषेध में उसके तदनुरूप बनने का नाम प्रेम है।

हजरत समनून ने कहा कि अल्लाह से प्रेम करने वालों ने लोक–परलोक दानों में प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली, क्योंकि नबी ने फरमाया है कि इंसान उसके साथ रहता है, जिससे प्रेम करता है, इसलिए उन्हें अल्लाह का साहचर्य प्राप्त है।

हजरत यहया बिन मुआज ने कहा कि जिस ने अल्लाह की मुहब्बत का दावा किया और उसकी निर्धारित सीमाओं की रक्षा न की, वह अपने दावे में सच्चा नहीं है।

हजरत हारिस मुहासिबी का कहना है कि प्रेम यह है कि तुम अपने तमाम वजूद क साथ किसी की ओर आकृष्ट हो जाओ, फिर तुम उसको अपने निज, अपनी आत्मा और उपने धन पर प्रमुखता दो, फिर अकेले में या सबके सामने उसके आदेश व निषेध में उसके तदनुरूप बनो और इसी के साथ–साथ तुम्हें इसका एहसास रहे कि तुम उसकी मुहब्बत का हक अदा करने से महरूम हो।

हजरत यहया बिन मुआज का कथन है कि मुहब्बत की एक राई मुझे सर्वाधिक प्रिय है सत्तर साल की उस इबादत के मुकाबले में, जो मुहब्बत के बिना हो।

तमाम सूफी इस पर सहमत है कि प्रेम प्रियतम के तदनुरूप होने का नाम है और तदनुरूपताओं में सबसे बड़ी तदनुरूपता मन की तदनुरूपता है।

इस तदनुरूपता का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सूफियों के मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है, इस सम्बन्ध में तीन घटनाऍ देखिए–

हजरत फुजैल बिन अयाज के सेवक अबुल अब्बास का कहना है कि एक बार हजरत फुजैल को पेशाब बन्द होने के शिकायत हो गई। उन्होंने आसमान की ओर हाथ उठाये और दुआ की, 'हे अल्लाह! मुझे तुझ से मुहब्बत है, उसके सदके में मुझे चंगा कर दे।' यह दुआ मांगते ही पेशाब रूकने की शिकायत दूर हो गयी। इस प्रकार यह शुभ–सूचना भी मिल गयी कि उनका प्रेम सच्चा प्रेम था।

हजरत इब्राहीम बिन अदहम एक बार सैर कर रहे थे। रास्ते में कहीं किसी पहाड़ पर एक व्यक्ति ने दो पद पढ़े। कवि ने अपने प्रियतम को सम्बोधित करते हुए कहा था, तेरी हर बात हम नजरअंदाज कर देते है, लेकिन हमारे लिए तेरी विमुखता असह्य है। यह सुनकर इब्राहीम बिन अदहम में बेचैनी पैदा हुई, यहॉ तक कि वह अचेत हो गये और एक रात–दिन अचेत रहे। जब सचेत हुए तो उन्होंने कहा कि मैंने पहाड़ की ओर से यह आवाज सुनी, 'हे इब्राहीम'! बन्दा बनकर रहो।' ऐसा सुनते ही मुझे होश आ गया और बेचैनी दूर हो गयी।

जुनैद बगदादी से उल्लिखित है कि एक बार हमारे गुरू सिर्री सकती बीमार पड़ गये। हमें इसका कोई कारण मालूम नहीं हो सका और न यह जान सके कि कौन–सी दवा दी जाए? लोगों ने एक बड़े डॉक्टर का पता बताया। हम अपने उस्ताद का पेशाब लेकर उनके पास गये। उन्होंने थोड़ी देर ध्यान से देखा और मुझ से कहा, मेरा विचार है कि यह किसी प्रेमी का कारूरा (पेशाब) है। हजरत जुनैद ने कहा कि यह सुनकर मैंने चीख मारी। कारूरा मेरे हाथ से गिर गया और मैं अचेत हो गया। होश आया और गुरू को पूरी बात सुनायी, तो वह मुस्काराये और डॉक्टर की प्रशंसा की।

शायद इसीलिए सुहरवर्दी ने एक बुजुर्ग का कथन नकल किया है कि 'जो व्यक्ति गुनाहों और हराम चीजों से बचे बिना अल्लाह से प्रेम का दावा करे, वह बहुत बड़ा झूठा है। जो खर्च किये बिना जन्नत की मुहब्बत का दावा करे, वह झूठा है और जो कोई फकीरों से प्रेम किये बिना अल्लाह के रसूल की मुहब्ब्त का दावा करे, वह भी झूठा है।

राबिया बसरी प्रायः ये पद बढ़ा करती थीं–

'तुम ईश्वर की अवज्ञा भी करते हो और उसके प्रेम का भी दम भरते हो। खुदा की कसम! यह बड़ी विचित्र बात है।

अगर तुम्हारा प्रेम सच्चा होता, तो उसका आज्ञापालन करते, क्योंकि प्रेमी अपने प्रियतम का आज्ञाकारी होता है।

इब्ने तैमिया ने यहॉ तक कह दिया कि जो जितना ईशप्रेम करेगा, वह उतना ही धर्म का पालन करेगा और ईश–प्रेम में जितनी ही कमी होगी, उतना ही वह कम धर्म का पालन करेगा। बल्कि इब्ने तैमिया ने तो मनुष्य के पैदा किये जाने का मूल उद्देश्य प्रेम ही को घोषित किया है। वह कहते हैं कि आयत–'जिन्नों और इंसानों को पैदा ही इसलिए किया गया है कि वे इबादत (भक्ति और आज्ञापान) करें। और 'हे लोगों! अपने पालनहार की इबादत (भक्ति और आज्ञापालन) करो, जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया में इबादत 'प्रेम' ही के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रेम नहीं तो इबादत नहीं हो सकती, इसलिए कि उत्कृष्ट प्रेम ही प्रियतम को उपास्य बना सकेगा।

जब यह बात सिद्व हो गयी कि मनुष्य के पैदा किये जाने का उद्देश्य इबादत अर्थात् प्रेम है, तो प्रेम को साध्य कहने में कोई संकोच नहीं रह जाता।

जुन्नून बिन इब्राहीम मिस्त्री का कथन है कि अपने बातिन को अल्लाह की ओर आकृष्ट रखो और जाहिर को लोगों की ओर। इससे स्पष्ट हो रहा है कि हदय में अल्लाह को बनाये रखना ही जीवन का मूल उद्देश्य है।

जुन्नून बिन इब्राहीम का एक और कथन नकल किया गया हैं। वह कहते है कि सूफी वह है, जिसने सृष्टि में केवल अल्लाह ही को पसन्द किया है। इससे प्रेम का साध्य होना ही स्पष्ट हो रहा है। जुन्नून का एक और कथन यह है कि आरिफ (जिसे मारफत हासिल हो) का पहला दर्जा हैरत (स्तब्धता) है, फिर अख्तियार (ग्रहण करना), फिर इंतिकाल (स्थानांतरण) और फिर जीवन अर्थात् सूफियों के नजदीक जीवन ही मूल वस्तु है, जबकि वे प्रेम ही में जीवन का अनुभव करते है।

अबूबक शिबली बिन युनुस का कथन है कि फकीर वह है जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी और वस्तु की ओर आकृष्ट न हो।

अबू उस्मान ने कहा है कि तसव्वुफ का अर्थ संसार–त्याग और वास्तविकताओं को पा लेना है और यह कौन नहीं जानता कि प्रेम सूफीमत में सबसे बड़ी वास्तविकता है।

सहल तुस्तरी तो खुलकर कहते हैं कि जिसने अल्लाह से प्रेम किया तो वास्तव में जीवन यही है और जिसने ऐसा न किया, तो उसका कोई जीवन ही नही।

रहा प्रेम का साधन होना, तो यह इतना स्पष्ट है कि इस में किसी मतभेद की कोई गुंजाइश की नहीं है। सूफियों के नजदीक प्रेम ही वह सोपान है जो उसे ईश्वर तक पहुॅचा सकता है, प्रेम ही वह माध्यम है, जो उसे प्रियतम की प्रसन्नता प्राप्त करने पर उभारता है, प्रेम ही व रास्ता है जो उसे प्रभु से मिलाता है, प्रेम ही वह मार्ग है जो उसके जीवन को प्रियतम के कहे अनुसार चलने पर उभारता है, इस तरह वह प्रियतम का हो जाता है और प्रियतम उसका।

कुरान भी स्पष्ट कर देता है–'हे ईमान वालो! अगर तुम में कोई अपने दीन (धर्म) से फिरता है, (तो फिर जाए) अल्लाह और बहुत से लोगों को पैदा कर देगा जो अल्लाह को प्रिय होंगे और अल्लाह उनको प्रिय होगा।

'हे नबी! कह दो कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियॉ और तुम्हारे नाते–रिश्तेदार और तुम्हारे वे माल, जो तुमने कमाये हैं और तुम्हारे वे कारोबार, जिनके ठंडे पड़ जाने का तुम को भय है और तुम्हारे वे घर, जो तुमको पसन्द है, तुमको अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह की जद्दोजेहद से अधिक प्रिय है, तो इंतिजार करो, यहॉ तक कि अल्लाह अपना फैसला तुम्हारे सामने ले आये और अल्लाह अवज्ञाकारियों का मार्ग–दर्शन नहीं किया करता।

एक बुजुर्ग ने शेख इब्राहीम अल–ख्वास से पूछा, 'तसव्वुफ ने तुम्हें कहॉ तक पहुॅचाया है? 'उन्होंने कहा, तवक्कुल तक' (अर्थात् अल्लाह पर पूर्ण भरोसा करने तक)। उस बुजुर्ग ने कहा, 'तुम अभी अपने बातिन को आबाद करने की तैयारी कर रहे हो और उस मंजिल से बहुत दूर हो, जहॉ तवक्कुल में फना होकर ईश्वर का दर्शन कर सकों।

हजरत राबिआ बसरी फरमाती है, अल्लाह के प्रेमी की आह को उस समय तक चैन नहीं, जब तक वह अपने प्रियतम के पास न पहुॅच जाए। अबू अब्दुल्लाह अल–कुरशी फरमाते हैं, प्रेम की वास्तविकता यह है कि तुम अपने प्रियतम पर अपनी हर चीज कुरबार कर दो और तुम्हारे पास कोई चीज बाकी न रहे।

सूफी प्रेम को सोपान इसलिए भी मानते है कि इसके बाद शौक की भावना उभरती है, जो प्रेम के बाद की सीढ़ी है। सूफी परिभाषाओं में शौ़क मिलन की चाह को कहते है। सुहरवर्दी कहते हैं कि मुहब्बत में शौक का वहीं स्थान है, जो तौबा के बाद जोहद (संसार–विमुखता) का है। जिस तरह तौबा (प्रायश्चित) के बाद जोहद उभरता है, उसी तरह जब मुहब्ब्त अच्छी तरह रच–बस जाए, तो शौक अपने आप उभरता है।

शेख अबू उस्मान कहते है, शौक प्रेम का फल है, जिसे अल्लाह से प्रेम होता है वह उससे मिलने को उत्सुक हो उठता है।

इश्के हकीकी और इश्के मजाजी का रहस्य

जैसा कि ऊपर वार्ता से सिद्ध किया जा चुका है कि सूफियों के नजदीक ईश–प्रेम ही मूल धर्म है। इसी ईश–प्रेम को सूफी इश्के हकीकी (वास्तविक प्रेम) के नाम से याद करते है। इश्के हकीकी उस विशेष प्रेम को कहते है जो आत्मावलोकन_द्वारा ईश्वर का होकर रह जाता है। इसकी पहचान यह है कि प्रियतम ईश्वर का प्रेम प्रेमी में हर उस गुण के लिए लगाव पैदा कर देता है, जो प्रियतम को प्रिय है, अतएव ऐसा प्रेम प्रेमी में विनम्रता पैदा करता है और वह हर उस वुस्तु से भी प्रेम करना सीखता है जिसमें वास्तविक प्रियतम प्रतिबिम्बित होता है। सूफी लोग ऐसे प्रेम को इश्के मजाजी कहते है।

इश्के मजाजी वह सांसारिक प्रेम है जो प्रियतम तक पहुॅचने का साधन बनता है। सूफी मानवीय प्रेम को आध्यात्मिक प्रेम तक पहुॅचने की सीढ़ी मानते है।

यौन–भावना स्वभावतया शक्तिशाली होती है, अतएव साधक उसके उद्दाम वेग को संयमित कर उसे आध्यात्मिक प्रेम में नियोजित करने की चेष्टा करता है।

कहते है कि जब तक मनुष्य सांसारिक प्रेम को नहीं जान पाता, उसके लिए आदर्श प्रेम तक पहुँचना सम्भव नहीं। लेकिन अपने आप में सांसारिक प्रेम या इश्के मजाजी बिल्कुल व्यर्थ की बात है। साधक सांसारिक सौन्दर्य का आनन्द तो अवश्य उठाता है, लेकिन वह वहीं तक नहीं रह जाता, उसे इश्के हकीकी तक आगे बढ़ना पड़ता है।

जिस इश्के मजाजी ने सूफी अनन्त सौन्दर्य के दर्शन न कर पायें, उस इश्के मजाजी से बचने की शिक्षा देते है, इसलिए कि अनन्त सौन्दर्य तो परमात्मा की ही एक–मात्र सत्ता है। वह परम सत्य और परम मंगल भी है। उसी के प्रतिच्छवि के रूप में समस्त जगत और उसके प्राणी अभिव्यक्त हो रहे है, इसलिए सांसारिक सौन्दर्य दर्शन उसी परमसत्ता के सौन्दर्य का दर्शन है। जामी की एक कविता में कहा गया है–

'धन्य है संसार का मालिक जिसने प्रत्येक अणु–परमाणु को दर्पण जैसा बनाया, जिससे उसका सौन्दर्य प्रतिबिम्बित होता है। गुलाबों में प्रकट होने वाले उस (परमात्मा) के सौन्दर्य ने बुलबुल को प्रेम से पागल बना दिया। उसी चिंगारी से शमा प्रकाशमान होती है, जिस पर क्षुब्ध होकर परवाना अपने आप को नष्ट कर डालता है। सूर्य में उसके प्रकट हुए सौन्दर्य को देखकर लहरों से कमल अपना सिर उठाता है। लैला के काबुल को देखकर मजनूं का ह्रदय खिंच गया था, क्योंकि उस (लैला) सुन्दर चेहरे में उस (परमात्मा) के सौन्दर्य की कोई किरण फूट उठी थी। उस (परमात्मा के सौन्दर्य) ने ही शीरी के होठों में वह मिठास भर दी थी, जिसने परवेज के हदय तथा फरहाद के जीवन का अपहरण कर लिया था। उसी का सौन्दर्य अब और प्रतिभासित हो रहा है, तथा पृथ्वी की सुन्दर वस्तुओं में से होकर इस प्रकार चमक रहा है, मानो वह परदे से छनकर आ रहा हो। यूसुफ के कोट में उसका ही चेहरा प्रकट हुआ था, जिस ने जुलैखा की शान्ति नष्ट कर दी थी। जहॉ पर भी तुम्हें हिजाब (परदा) दिखायी दे जाए, उसके पीछे वही छिपा हुआ है। जो हदय प्रेम से अभिभूत हो उठता है, उसमें वह आकर्षण भर देता है।

'प्रेम–जगत में क्या–क्या कुछ नहीं किया जाता। मृदु होठों के विचार में उन्हें कटुताएँ भी प्रिय महसूस होती है, प्रेम–उद्यान के कॉटे भी सुन्दर लगते है। प्रियतम के हाथ का विष भी अमृत दिखायी पड़ता है। पत्नी का साथ हो तो वन भी घर जैसी शान्ति देता है। कितने ही नाजों में पले देखे कि प्रिया के लिए कॉटे चुना करते है। कितने ही बोझ उठाने वाले किसी सुन्दरी की याद में बैठकर सहर्ष घायल होते रहते है। लोहार दिन भर अपना हुलिया बिगाड़े रहता है। कि रात आए तो अपनी प्रिया जीवन–संगिनी का चुम्बन ले सके।

उसका मूल प्रेरक उसी जीवन्त प्रिये (पत्नी या प्रिया) का अस्तित्व होता है, जिसका साक्षात् चिहन उसे इन वस्तुओं में दिखायी देता है, तो फिर अगर प्रयत्न व परिश्रम ही करना है और वह भी किसी जिंदा के लिए, तो उसे साक्षात् व शाश्वत जीवन (प्रभु) के लिए क्यों न करो जो तुम्हारी सांसारिक प्रेमिकाओं की तरह कुछ ही दिनों की नहीं। और तुम यह भी देखते और जानते हो कि सांसारिक प्रेम मात्र क्षणिक होता है, यहॉ तक कि तुम मॉ–बाप को भी भूल जाते हो, जानते हो क्यों? इसलिए कि वह शाश्वत जीवन स्वयं तुम्हें नयी–नयी चीजों की मुहब्बत देता रहता है। असल में वे तमाम चीजें, उस दीवार की तरह थी, जिस पर सूर्य की किरणें पड़ रही है। सूर्य छिप जाए तो किरणें गायब और दीवार की रोशनी भी खत्म हो जाती है, क्योंकि दीवार अपने आप में रोशन नहीं होती, फिर क्यों न उस सूर्य की ओर पलटो, जिसकी किरणें शाश्वत है, जो कभी डूबता नहीं और जिससे किया जाने वाला प्रेम भी कभी समाप्त नहीं होता।

सूफियों का कहना है कि सांसारिक प्रेम में स्त्री–पुरूष का प्रेम तो साधारण सी बात है, लेकिन 'अहं' पर विजय पाने के लिए युवा के प्रति प्रेम अधिक उपयुक्त है। इसके सम्बन्ण में जो दलील सूफी साधक पेश करते है, उसका सारांश यह है कि स्त्री के प्रति जो प्रेम होता है उसमें स्वार्थ होता है और सुन्दर युवा के प्रति जो प्रेम होता है, उसमें स्वार्थ नहीं होता, उसमें विकार नहीं होता। विकारहीन होने के कारण यह स्वार्थ पर और बुद्धि पर विजय पाने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है। लेकिन सच तो यह है कि इश्के मिजाजी का यह विचार शुरू में चाहे जितना पवित्र रहा हो और अहं को नियंत्रित करने में चाहे जितना उपयोगी सिद्ध हुआ हो, लेकिन बाद में इससे विकार पनपने की राहें खुल गयी। जिसको बन्द करने के लिए सूफियों को कठिन परिश्रम करना पड़ा। अगर यह बात न होती तो वर्तमान युग के सूफी विद्वान और साधक अशरफ अली थानवी को बार–बार अमरदपरस्ती (किशोर के प्रति वासनात्मक प्रेम) से रोकने पर बल न देना पड़ता। लिखते है।

'आजकल अमरदपस्ती आम होती जा रही है। यह कार्य हराम होने में सब से आगे है, कुछ लोग ऐसे है जो वासनाओं से मुक्त अवश्य है, पर प्रायः उनमें भी ऐसे है जो 'नजरबाजी' के रोग से पीड़ित है। उन्हें मालूम होना चाहिए कि जिना ऑख से भी होती है और यह भी हराम है, इसलिए निगाह की हिफाजत भी जरूरी ह। 'यह बुराई ऐसी है जो अपने प्रभावों के कारण जीवन के लक्ष्य को प्रभावित करती है, इसलिए इलाज ध्यान से होना चाहिए।

मौलाना रूमी ने अंकित किया–'जो प्रेम रंग–रूप के कारण होता है, वह वास्तव में प्रेम नहीं, बल्कि उसका अंजाम लज्जा है (क्यांकि प्रेम नश्वर वस्तु के साथ कायम नहीं रह सकता। प्रेम तो जीवंत और सचेत सत्ता के साथ होना चाहिए, क्योंकि नश्वर वस्तुओं के प्रति प्रेम नहीं कि फना होने वाली चीजें, फना होकर हमारे पास नहीं आती। बस प्रेम उस जीवन्त का अपनाओ जो हमेशा बाकी है और तुझको रूह ताजा करने वाली (मुहब्बत की) शराब पिलाता है।

मौलाना थानवी ने एक और जगह लिखा है–कुछ बुजुर्ग सूफियों ने इस मजाजी तरीके को ही अपनाया था, पर चूँकि इस युग में इस तरीकें मे खतरा अधि है, क्योंकि वासनापूर्ण वातावरण में इसकी संभावना अधिक है, इसलिए जान–बूझकर ऐसे तरीके को चलाना सही नहीं, हॉ अगर संयोगवश ऐसा हो जाए तो उसे इश्के हकीकी की ओर मोड़ देना चाहिए। इन तरीकों का बदला जाना समय–समय के बदलने से असम्भव नहीं और गजब यह है कि कुछ लोग इसे ईश–सान्निध्य का साधन

समझते है। इसके लिए एक घटना का उल्लेख पर्याप्त, होगा, जिसका उल्लेख इमाम कुशैरी ने अपनी पुस्तक 'रिसाला कुशैरिया' में किय है। उसमें कहा गया है कि हजरत इब्ने जला (जो हजरत जुन्नून मिस्त्री और दूसरे बुजुर्गो की संगति में रहे है) फरमाते है कि मैं एक बार अपने शेख के साथ जा रहा था कि यकायक एक सुन्दर लड़के को देखा। मैंने शेख से कहा, हजरत! क्या आप यह विचार कर सकते हैं कि अल्लाह इस हसीन लड़के को अजाब देगा? शेख ने फरमाया कि क्या तुमने उसकी ओर देख लिया है? (जब यह है) तो तुम इसका बुरा अंजाम भुगतोगे। इब्ने जला कहते हैं कि इस घटना के बीस साल बाद (इसका प्रभाव स्पष्ट हुआ) कि मैं कुरआन मजीद बिल्कुल भूल गया।

वियोग–संयोग की स्थिति

सूफियों के प्रेम–दर्शन में वियोग–संयोग का भी विशेष स्थान है। पर इन दानों शब्दों का अर्थ सूफियों ने जो लिया, वह बहरहाल उससे भिन्न है जो सामान्य रूप से लिया और समझा जाता है। हदीस में है कि–'जो व्यक्ति मेरी और एक बालिश्त चलकर आता है, मैं उसकी ओर एक हाथ जाता हूँ और जो मेरी ओर एक हाथ चलता है, मैं उसकी ओर खुले हुए दो हाथ आता हूँ और जो मेरी और चलकर आता है, उसकी ओर मैं दौड़कर आता हूँ। सूफी इस सान्निध्य की अनेकों श्रेणियॉ बताते हैं। स्पष्ट है कि कोई भी प्रेमी श्रेणियों को जान लेने के बाद अन्तिम श्रेणी तक पहुॅचना ही अपना सर्वोत्कृष्ट कार्य समझेगा।

संयोग की इन श्रेणियों और स्थितियों पर भी सूफियों ने बड़ी वार्ताऍ की है। उनका कहना है कि जब तक आत्माऍ आत्मा जगत में थी, वहॉ का सान्निध्य एक विशेष प्रकार का था और उसकी सीमाऍ निश्चित थीं। दोनों फरीकों की ओर से ऐसा नहीं था। अल्लाह का बन्दे से ताल्लुक उस समय बढ़ता है जब बन्दे की ओर से तलब हो और तलब की वास्तविकता ही कर्म है। वहॉ कर्म था ही नहीं, इसलिए सान्निध्य बढ़ता न था। फिर आत्मा–जगत् से नश्वर जगत में देह देकर भेजा गया, ताकि यहॉ तलब के आधार पर कर्म जन्म ले और इससे प्रगति का द्वार खुले। तात्पर्य यह है कि अतिरिक्त सान्निध्य के लिए तलब और तलब के बाद यत्न की जरूरत है और वह सान्निध्य जिसे, चेतना सहित प्राप्त किया जाता है सूफी कहते हैं कि जब सांधक साधना में लगा रहता है, तो उसके भीतर की बुराइयॉ दूर होने लगती हैं और भलाइयॉ जड़ पकड़ने और पनपने लगती है। ऐसे पाक–साफ लोगों के बारे में हदीस में आता है कि अल्लाह ने फरमाया –' और मेरा बन्दा बराबर मुझ से नपलों के जरिए सान्निध्य प्राप्त करता रहता है, यहॉ तक कि मैं उसको प्रिय बना लेता हूँ, तो मैं उसकी श्रवण शक्ति बन जाता हूँ, जिससे वह सुनता है और उसकी दृश्य–शक्ति हो जाता हूँ, जिससे वह देखता है और उसका हाथ हो जाता हूँ, जिससे वह किसी जीच को पकड़ लेता है और उसका पॉव हो जाता हूँ, जिससे वह चलता है।

इस हदीस में चूँकि अल्लाह को यन्त्र और बन्दे को कर्त्ता कहा गया है, इसलिए सूफी लोगों ने इसका पालन करने ने लिए इस पल बल दिया है कि बन्दा कर्त्ता और अल्लाह यन्त्र बन जाए और चूँकि इस तरह सान्निध्य प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि अधिक से अधिक नफ्लों पर जोर दिया जाए। इसको वे अपने पारिभाषिक शब्दों में 'कुर्बेरवाफिल' कहते है।

हजरत बायजीद बुस्तामी ने एक बार अल्लाह को सपने में देखा। कहा, हे अल्लाह ! मुझे अपने तक पहुॅचने का सबसे नजदीक का रास्ता बता दीजिये। उत्तर मिला, अपने आपको छोड़ दो और जाओ।

अर्थात् अपने ऊपर नजर करना छोड़ दें, अपने को नेस्त व नाबूद समझें, अहं को ह्रयद से खुरच कर फेंक दें, अल्लाह के आदेशों में टाल–मटोल न करें, क्योंकि अल्लाह और बन्दे के बीच यही अहं रूकावट बना हुआ है। अगर यह निकल जाए तो बस संयोग हुआ और जब तक बाकी है। उस समय तक संयोग हो ही नहीं सकता, अतएव अपनी कमजोरी, और विवशता पर नजर डालें। अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाऍ, दुआऍ करें, विनम्रता पैदा करें, दुराचार समाप्त करें, सदाचार को जन्म दें, गफलत जाती रहे और अल्लाह का ध्यान आ जाए, यहॉ तक कि–

आरजू यह है कि निकले दम तुम्हारे सामने तुम हमारे सामने हो हुम तुम्हारे सामने।

हजरत जुनैद का कथन है कि अल्लाह जितना अधिक अपने बन्दों के दिलों को अपने करीब देखता है, उतना ही वह भी उनके करीब आ जाता है। अब देखना यह है कि तुम्हारे दिल के कितना करीब है।

हजरत जुन्नून मिस्त्री कहते हैं कि जो कोई अल्लाह से जितना ही नजदीक होता है, उतना ही उस पर अल्लाह का रौब आ जाता है।

विरह–दर्शन

हिन्दी सूफी काव्य में संयोग–वियोग का वर्णन अत्याधिक पाया जाता है। यह संयोग–वियोग तसव्वुफ का एक अंग है। संयोग की कल्पना 'सान्निध्य' या 'कुर्ब' में क गयी है, ऐसे ही वियोग क कल्पना 'कब्ज व वस्त' में की गयी है। इसके लिए सूफी बुखारी की एक हदीस प्रस्तुत करते है, जिसमें हजरत आइशा ने उल्लेख किया है कि अल्लाह के रसूल (नबी बनाये जाने के बिल्कुल शुरू के युग में ईश–वाणी के आने में लम्बा अवकाश होने पर) इतना दुःखी हुए कि गम के कारण कई बार इस इरादे से तशरीफ ले गये कि पहाड़ की ऊॅचाई पर से गिरकर जान दे दें, तो जब किसी पहाड़ की चोटी पर अपने को गिराने के उद्देश्य से चढ़ते, तो त्रिप्रील आपको नजर ते और फरमाते, हे मुहम्मद! (गम मत खाओ) आप अल्लाह के रसूल है, तो सचमुच इससे आपके दिल को सुकून हो जाता और जी ठहर जाता।

मिलन का न होना ही वियोग है। जिस उद्देश्य से भी ऐसा हो, सूफी इसे 'कब्ज' कहते है और जब आशा बढ़ जाती है आर सान्निध्य प्राप्त करने की ओर साधक मार्ग–बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ता है, तो उसे 'बस्त' कहते है। इसीलिए सूफी कहते है कि भविष्य की आशाओं को लेकर 'बस्त' की क्रिया बराबर चलती रहती है और कब्ज वर्तमान में मौजूद रहता हैं। इसी को 'घुटन' भी कहते है।

कब्ज के बहुत से कारण बताए गये है। कभी दुराचरण के कारण साधक उस स्वाद से वंचित हो जाता है, जो प्रियतम के आज्ञापालन में उसे मिलता। कभी यह स्थिति सुस्ती और मलाल के कारण पैदा होती है। कभी परीक्षा के लिए इस स्थिति को जन्म दिया जाता है और यह परीक्षा उसके प्रियतम की ओर से होती है।

कब्ज से यह न समझा जाए कि ऐसा प्रियतम के रोष के कारण हुआ है, बल्कि कभी–कभी दूसरी हरकतों से भी इस स्थिति में प्रेमी फंसा दिया जाता है। साधक के सुधार के लिए 'बस्त' को समाप्त कर दिया जाता है, ताकि किसी प्रकार का दंभ–अभिमान पैदा न हो। कब्ज की स्थिति साधक के रूत्बे में श्रेष्ठता पैदा करने का प्रमाण है।

इसी से सम्बन्धित यह बात भी जानने की है कि सूफियों के अनुसार अल्लाह का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि साधक को किसी मुसीबत में डाला जाए। वे कहते है कि मुसीबत वही है जो साधक के दिल को बेचैन कर दे, वह परेशान रहे। इसीलिए उनका विचार है कि जो साधक मुसीबत आने पर परेशान और बेचैन नहीं होत, धैर्य से काम लेकर उसे आसानी से पी जाता है, तो सच में यह उसके लिए मुसीबत हुई नहीं। वास्तव में सूफियों का यही विरह–दर्शन है।

सूफी यह भी कहते है कि गम से मन को कष्ट अवश्य पहुँचता है, लेकिन उससे आत्मा प्रज्वलित हो उठती है, इसलिए कि इन चीजों से उसे सान्निध्य प्राप्त होने की जो शुभ–सूचनाएँ दी गयी है, उसके मन में उनसे एक प्रकार की ज्योति जागती रहती है।

सूफी कहते है कि मुसीबतें वास्तव में व्यापार समान है कि एक चीज हम से ली जाती है और उसके बदले में दूसरी चीज दी जाती है। मुसीबत अपने स्वरूप की दृष्टि से तो मुसीबत है, लेकिन परिणाम की दृष्टि से नेमत है। एक बुजुर्ग का कहना है कि वर्षो के मुजाहदे (साधना) से बातिन को वह लाभ नहीं होता, जो एक घड़ी के गम से हो जाता है, मुख्य रूप से ईमान सुदृढ़ होता है, विश्वास बढ़ता है और यही उसकी सफलता है।

हजरत अबुल हुसैन वर्राक फरमाते हैं, मैंने अबू उस्मान हियरी से 'गम' के बारे में पूछा, तो फरमाया कि गमगीन (दुःखी) आदमी को गम के बारे में पूछने की फुर्सत नहीं होती है। पहले कोशिश करो कि गम मिल जाए, फिर (अगर जरूरत होगी) मालूम करना अर्थात् फिर उसकी फुर्सत न होगी।

रूमी कहते हैं कि प्रेम का बीमार इसलिए होता है कि दर्द में कमी क्यों हो रही है, इसे अधिक कीजिए।

सूफी यात्रा को भी विरह–दर्शन का एक अंग मानते है। उनका कहना है कि यात्रा भी एक प्रकार का मुजाहदा (साधना) है, जिसमें कष्ट व पीड़ा को सहन कर साधक अपनी मंजिल को पा लेता है। कुछ सूफियों के नजदीक साधक की साधना यात्रा ही में पूरी होती है।

सुहरवर्दी ने अपनी पुस्तक में किसी बुजुर्ग का कथन नकल किया है कि तुम कोशिश करो कि हर रात तुम एक नयी मस्जिद में मेहमान रहो और तुम्हारी मौत उस वक्त आए, जब तुम दो मंजिलों के बीच हो।

शेख इब्राहीम अल–खव्वास कहते हैं कि मैं एक जंगल में ठहरा और ग्यारह दिन तक कुछ न खाया। अन्ततः मेरे मन ने चाहा कि मैं जंगल की घास खाऊँ। मैंने देखा कि सब्जी मेरी ओर बढ़ती हुई आ रही है। मै वहाँ से भाग गया, फिर मैंने मुडकर देखा तो वह वापस चली गयी। आप से पूछा गया, आप उससे क्यों भागे थे? फरमाया, मेरे मन को इससे मदद लेने का विचार पैदा हुआ था।

प्रेम का लक्ष्य

इस पूरी वार्ता से यह बात अपने आप उभर कर सामने आती है प्रेम का लक्ष्य सूफियों के नजदीक संयोग ही है अर्थात् ईश–सान्निध्य की प्राप्ति। इसी के लिए वह साधना करता है, इसी के लिए वह दुःख सहता है, इसी के लिए पीड़ाओं को सहन करता है, इसी के लिए वह यात्राएँ करता है, इसी के लिए वह तड़पता है, बिलखता है परेशान रहता है,

निष्कर्ष

प्रेम ही जीवन है। सच्च प्रेम होने पर ही भक्त को ईश्वर की प्राप्ति होती हैं। प्रेम के मार्ग में बाधाएँ आती है किन्तु भक्त इन बाधाओं से विचलित नहीं होता हैं सूफी कवियों ने आध्यात्मिक प्रेम का आधार हिन्दु राजाओं की कथाओं से ग्रहण किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *इमाम गजाली : खुलासा एहयाउल उलूम, पृ.305*
2. *हमीदुद्दीन फराही : तफ्सीर सुर : इख्लास : अनु. मौलाना अमीन अहसन इस्लाही।*
3. *कुरआन : अल–बकरः, 165*
4. *सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ. 523*
5. *अल– अब्दुर्रब्बानी, पृ. 18*
6. *इमाम गजाली : एहयाउल उलूम, पृ.306–307*
7. *इमाम गजाली : एहयाउल उलूम, पृ.309*
8. *इमाम गजाली : एहयाउल उलूम पृ 309–10*
9. *उरूज कादिरी : इस्लामी तसव्वुफ, 289*
10. *इमाम कुशैरी : रिसाला कुशैरिया और उसकी टीकाएँ।*
11. *उरूज कादिरी : इस्लामी तसव्वुफ, पृ. 293*
12. *इमाम कुशैरी : रिसाला कुशैरिया (इस्लामी तसव्वुफ, पृ.293)*
13. *एहयाउल उलूम, भाग 4, पृ.209*
14. *एहयाउल उलूम, भाग 4, पृ. 209*
15. *सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ.505*
16. *सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ.505*
17. *मज–मूआ फतावा शेखुल इस्लाम अहम बिन तैमिया, भाग 10, पृ.26*
18. *मज–मूआ फतावा शेखुल इस्लाम अहमद बिन तैमिया, भाग 10, पृ.26।*
19. *कुरआन : अज–जारियात, 23*
20. *कुरआन : अल–बकर, 27*
21. *मज–मूआ फतावा शेखुल इस्लाम इब्ने तैमिया, भाग 10, पृ.56*
22. *अहवाल व अकवाले बुजुर्गानेदीन, संग्रह : नसीम अहमद अलवी झंझानवी।*

23. अहवाल व अकवाले बुजुर्गानेदीन, संग्रह : नसीम अहमद अलवी झंझानवी।
24. अहवाल व अकवाले बुजुर्गानेदीन, संग्रह : नसीम अहमद अलवी झंझानवी।
25. अहवाल व अकवाले बुजुर्गानेदीन, संग्रह : नसीम अहमद अलवी झंझानवी।
26. अहवाल व अकवाले बुजुर्गानेदीन, संग्रह : नसीम अहमद अलवी झंझानवी।
27. इसके लिए सूफियों की प्रसिद्ध पुस्तकें कश्फुल महजूब, अवारिफुल मआरिफ, कीमियाए सआदत, एहयाउल उलूम, मलफूजात, फवाइदुल, फवाइद, मंतकत्तैर आदि देखी जा सकती है।
28. कुरआन : अल–माइदा, 54–551
29. कुरआन : अत–तौबा, 24
30. सुहरर्वी : अवारिफुल मआरिफ, पृ.504
31. सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ.505
32. सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ , पृ.507
33. सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ. 508
34. सुहरवर्दी : अवारिफुल मआरिफ, पृ.508
35. अल–अब्दुर्रब्बानी, पृ.69
36. डॉ. रामपूजन तिवारी : सूफीमत–साधना और साहित्य, पृ.316
37. राधाकमल : ब्योरो एंड आर्ट ऑफ मिस्टीसिज्म, 113
38. डॉ. रामपूजन तिवारी : सूफीमत–साधना और साहित्य, पृ.317
39. तालीमुद्दीन, पृ. 32640.
40. शरीअत और तरीकत, पृ. 317
41. शरीअत और तरीकत, पृ 422
42. अंफासे ईसा, पृ.138–39–40
43. बवादिरून्नवादिर, पृ.700
44. शरीअत व तरीकत, पृ. 318
45. अंफासे ईसा, पृ.21747.
46. कुरआन : अल–हदीद, 15
47. कुरआन : वाकिआ, 17
48. कुरआन : आले इम्रान , 93
49. कुरआन : अर–रअद, 34
50. इमाम बुखारी : सहीह बुखारी : भाग 1
51. इफाजात, भाग 7, पृ. 10
52. अल–अब्द वल वईद, पृ. 28–31
53. अत–तकश्शुफ अन मुहिम्मातित–तसव्वुफ, पृ. 135
54. इमाम बुखारी : शरीफ, भाग 1।
55. अशरफ अली थानवी : शरीअत और तरीकत, पृ.251
56. अंफासे ईसा, पृ.99